ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 274-276

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-III, Issues-18, YEAR- Dec. -2020

नक्सलवाद : आन्तरिक सुरक्षा को चुनौती

संजय Email : sanjaykspg0318@gmail.com

Received- 28.06.2020, Revised- 01.07.2020, Accepted - 04.07.2020

सारांश– ***द्वितीय विश्व युद्ध की समाप्ति के बाद और शीत युद्ध के प्रारम्भिक चरण में 15 अगस्त 1947 को भारत ने स्वतंत्रता प्राप्त की। विश्व के अनेक देश स्वतंत्रता संघर्ष कर साम्राज्यवादी शासन के शोषण से मुक्त हुए। विश्व के देश पूँजीवादी एवं साम्यवादी गुट में षामिल हो रहे थे, जिनका प्रभाव भारत पर भी पड़ रहा था। भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू सदियों से गरीबी, शोषण का सामना कर रही भारतीय जनमानस को दोनों महाशक्तियों (अमेरिका एवं सोवियत संघ), से समान सम्बन्ध बनाते हुए भारत को नवनिर्माण एवं विकास के पथ पर अग्रसर करने का प्रयास कर रहे थे। उनका कहना था कि ''यह स्वतंत्रता सही मायने में तभी अपने अर्थ को साकार करेगी, जब देश महात्मा गाँधी के कथन ''हर आँख से आँसू पोंछने एवं हर बच्चे के चेहरे पर मुस्कान के सपने को साकार करेगा।''***

कुंजीभूत शब्द–विश्व युद्ध, समाप्ति, शीत युद्ध, प्रारम्भिक, स्वतंत्रता, संघर्ष।

एसोसिएट प्रोफेसर– रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन, कुँवर सिंह पी0जी0 कॉलेज, बलिया (उ0प्र0) भारत

अनुरूपी लेखक

डॉ0 भीमराव अम्बेडकर ने चेतावनी दिया था कि ''राजनीतिक स्वतंत्रता तब तक अर्थहीन है जब तक कि आर्थिक स्वतंत्रता और सामाजिक न्याय की स्थापना नहीं कर दी जाती।'' यह दबे–कुचले वर्गो के लिए भूमि, आजीविका और सम्मानजनक जीवन की लड़ाई है, जिसे आगामी वर्षो में राजनीतिज्ञों ने बहुत महत्ता प्रदान नहीं किया, परिणाम स्वरूप नक्सलवाद के रूप में भारत की आन्तरिक सुरक्षा को एक बड़ा खतरा उत्पन्न हो गया है जो 20 राज्यों के 223 जिलों को अपनी चपेट में ले चुका था। इन क्षेत्रों में कानून व्यवस्था एवं प्रषासन को नक्सली अपने कब्जे में कर राज्य सरकारों को सीधी चुनौती दे रहे है। नक्सलवाद से सर्वाधिक प्रभावित राज्यों में छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश, उत्तर प्रदेश, झारखण्ड, महाराष्ट्र, केरल, कर्नाटक, तमिलनाडु, आन्ध्रप्रदेश, बिहार, उड़ीसा, तेलंगाना, पश्चिम बंगाल है। ये नक्सलवादी घोर बर्बरता और हिंसा की घटनाओं को अंजाम दे रहे है। नक्सलवाद की उत्पत्ति पश्चिम बंगाल के सिलीगुडी संभाग में स्थित नक्सलबाडी क्षेत्र से 22 मई 1967 को आन्दोलन के रूप में शुरू हुआ, जिसमें खारीबाडी एवं फासीदेवा गाँव भी सम्मिलित थे। इस राजनीतिक और सामाजिक – आर्थिक कृषक आन्दोलन को एक सशस्त्र संघर्ष में परिवर्तित करने वाले प्रवर्तक कारक के रूप में देखा जा सकता है। इसके नेतृत्वकर्ता माओ के विचारों से प्रेरित चारू मजूमदार, जंगल संथाल, कानू सान्याल, कदम मलिक, कन्हाई चटर्जी आदि ने इस आन्दोलन को आगे बढ़ाया। उनका विचार था, कि भारत को चीन के तर्ज पर भूमि सुधार करना चाहिये।

अगर देश की सरकार यह कर पाने में असमर्थ है, तो व्यवस्था बदल लेनी चाहिए। इस आन्दोलन के तीन उद्देश्य निर्धारित किये गये।

1. खेत जोतने वाले को खेत का हक मिले।
2. विदेशी पूँजी की ताकत समाप्त की जाय।
3. वर्ग एवं जाति के विरूद्ध संघर्ष हो।

उक्त तीन विचारधारा को लेकर माओवादी आन्दोलन दूर–दूर तक फैल गया। इस आन्दोलन के नेता चारू मजूमदार का मानना था कि ''भारत का हर कोना (हिस्सा) ज्वालामुखी बन चुका है। यह फूटने वाला ही था, और भारत में बहुत उथल–पुथल की सम्भावना थी'' यही ध्यान में रखते हुए उन्होंने अपने सदस्यों से आह्वान किया कि संघर्ष का कही भी और हर जगह विस्तार करो।'' परिणामस्वरूप आन्ध्र के श्रीकाकुलम, पश्चिम बंगाल के देबरा, गोपीवल्लभपुर, बिहार के मसहरी, भोजपुर तथा उत्तर प्रदेश के लखीमपुर खीरी के पलिया क्षेत्र में इसका असर देखने को मिला। सन् 1970–71 में नक्सलवादी हिंसा अपने चरम पर थी। इस अवधि में लगभग 4000 घटनाएँ घटित हुई। इस आन्दोलन का विकास समयोपरान्त आगे बढ़ता गया, और नक्सलवाद को जनमानस का साथ मिलता गया। भारत के अनेक राज्यों में सामाजिक एवं आर्थिक असमानताएँ है, इसके साथ में गरीबी, भुखमरी, बेरोजगारी, आवास, सम्बन्धी समस्या ने इसे और बढ़ा दिया।

नक्सलवाद पनपने के कारण– नक्सलवाद के प्रादुर्भाव एवं क्रमिक विकास पर नजर डालने से इसके कुछ बुनियादी कारणों को सहज रूप में देख जा सकता है जो निम्नवत है–

1– नक्सलवाद उपेक्षित एवं वंचित वर्ग द्वारा चलाया जा रहा आन्दोलन है।

2– इस आन्दोलन में गरीब, अशिक्षित, बेरोजगार और बुनियादी सुविधाओं से वंचित

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-III, Issues-18, YEAR- Dec. -2020

लोग जुड़े हुए है।

3– भारत में जनजातियों की अधिकांश जनसंख्या ग्रामीण एवं जंगली क्षेत्रों में रहती है।

4– अमीर–गरीब के बीच खाई बढ़ती जा रही है।

5– संसाधनों के उपभोग में प्रशासनिक, राजनीतिक, जमीदारों एवं माफियाओं का गठबंधन स्थापित है।

6– प्रशासनिक विभागों में व्याप्त भ्रष्टाचार से लोग परेशान है।

7– भ्रष्ट पुलिस बल के अत्याचारों से जनता का त्रस्त होना।

8– विलम्बित न्यायिक प्रक्रिया में समय से न्याय न मिलना।

9– विस्थापित लोगों को समय से आर्थिक सहायता प्राप्त न होना।

10– गुप्तचर संस्थाओं में आपसी तालमेल की कमी होना।

11– नक्सल संगठनों में महिलाओं का शामिल होना।

12– बौद्धिक लोगों एवं मानवाधिकारवादियों का समर्थन प्राप्त होना।

13– नक्सलियों को पर्याप्त राजनीतिक एवं आर्थिक मदद प्राप्त होना।

14– नक्सलियों को पड़ोसी राष्ट्रों से मदद प्राप्त होना।

नक्सलवाद के आर्थिक तंत्र– भारत के कई राज्यों में नक्सलवाद ने अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया है। ये लोग कानून व्यवस्था के लिए नये–नये नियम लागू करते रहते है। ये आदिवासी इलाकों में जन अदालत लगाते रहते हैं, जिनमें वे रोजमर्रा के मामलों में अपने न्याय के फैसलों को लागू करते हैं। इनकी आय के स्रोत उद्योगपतियों, व्यापारियों, प्रशासनिक अधिकारियों, ठेकेदारों, पेट्रोलपंपों, बस–ट्रक मालिकों से अवैध की वसूली है जिसे "लेवी" कहा जाता है। ये धनराशि 5 प्रतिशत से 10 प्रतिशत तक होती है, इसके अतिरिक्त अपहरण, फिरौती, जंगलों की लकड़ी, तेंदूपत्ता, गाँजा, अफीम की खेती करने वालों से इन्हें आय प्राप्त होती है। छत्तीसगढ़ के अबूझमाड़ के जंगलों में नक्सलियों का अमानवीय चेहरा सामने आया है, यहाँ 237 गाँवों में फैली जनजातियों से प्रति व्यक्ति 10 रूपये 'आदमी टैक्स' वसूल किया जा रहा है। जिनकी संख्या लगभग 22000 है। एक अनुमान के अनुसार माओवादी साल में 1200 से 1800 करोड़ की धन उगाही करते है।

नक्सलवाद एवं आन्तरिक सुरक्षा– माओ की विचारधारा "राजनैतिक शक्ति बन्दूक की नली से पैदा होती है। मजदूर वर्ग और श्रमिक जनता बन्दूक की शक्ति के बिना सशस्त्र पूँजीपतियों व जमींदारों को पराजित नही कर सकते। अतः बन्दूक की शक्ति के द्वारा ही विश्व को एक नये साँचे में ढ़ाला जा सकता है। युद्ध को मिटाने का एकमात्र उपाय युद्ध है बन्दूक से छूटकारा पाने के लिए हमें बन्दूक को अपने हाथों में मजबूती से पकड़ना होगा।" यह विचारधारा चीन तथा नेपाल में सफल हो गयी, और भारत भी इसका प्रयोग स्थली बना हुआ है। नक्सलियों का मानना है कि 2050 तक दिल्ली के लालकिले पर अपना ध्वज फहरायेंगे। आज सारा विश्व आतंकवाद, उग्रवाद एवं अन्य विद्रोही गतिविधियों से त्रस्त है। भारत के पूर्व प्रधानमंत्री डॉ0 मनमोहन सिंह ने नक्सलवाद को भारत की आन्तरिक सुरक्षा के लिए सबसे बड़ा खतरा बताया है। ये नक्सलवादी माओ की विचारधारा से प्रेरित होकर हिंसा का मार्ग अपनाये हुए है। भारत में नक्सलवाद के प्रमुख संगठन माओवादी कम्युनिस्ट सेन्टर, सीपीआई, एमएल–लिबरेशन, पीपुल्स वार ग्रुप, कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इण्डिया (माले) सीपीआई एमएल–पीपुल्स वार ग्रुप, पीपुल्स गुरिल्ला आर्मी, कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इण्डिया माओवादी आदि लगभग 60 संगठन शामिल है। पड़ोसी राष्ट्रों की गुप्तचर संस्थाएँ इन नक्सली गुटों की सहायता कर रही है, जिसमें माओवादी पार्टी की समन्वय समिति और दक्षिण एशिया संगठन, नेपाली माओवादी, पाकिस्तानी आई0एस0आई0, श्रीलंका का लिट्टे आदि संगठनों का आपस में गठजोड़ दिखाई दे रहा है। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी अनेक देश माओवाद का समर्थन करते दिखाई दिये है। जिसमें स्पेन, पेरू, मैक्सिको, जर्मनी, नार्वे, बेल्जियम आदि देश इनको अपना समर्थन प्रदान कर रहे है। नक्सलवादी आन्दोलन भारत के लगभग 40 प्रतिशत भौगोलिक क्षेत्र अर्थात 92000 वर्ग कि0मी0 में फैल चुका था। जिसे लाल गलियारा कहा जाता है। यह क्षेत्र भारत के पूर्वी तट पर स्थित है, लाल गलियारा बनाने वाले जिले देश के सबसे गरीब जिलों में से है। इस क्षेत्र में खनिज, वानिकी और जल विद्युत उत्पादन क्षमता में भारत का 60: वाक्साइट, 25: कोयला, 28: लौह अयस्क, 92: निकिल तथा 28: मैग्नीज का भण्डार है। किन्तु इसके अतिरिक्त पश्चिमी भाग में भी माओवाद का प्रसार पूना से अहमदाबाद तक हो रहा है, जिसमें भारत के प्रमुख औद्योगिक क्षेत्र मुम्बई, नासिक, सूरत, बड़ौदा, शामिल है जिसे स्वर्णिम गलियारा की संज्ञा दी जा रही है। केरल के भी कुछ क्षेत्रों में इसके प्रसार को देखा जा रहा है। नक्सलियों द्वारा किये गये हमलों में मुख्यमंत्री चन्द्र बाबूनायडू पर हमला (1 अक्टूबर 2003), बिहार के जहानाबाद में जेल पर हमला 375 कैदियों को रिहाई (13 नवम्बर 2005), छत्तीसगढ़ के दन्तेवाड़ा के जवानों की हत्या (6 अप्रैल 2010), दरभा घाटी में कांगेस की परिवर्तन रैली के नेताओं पर हमला (25 मई 2013), आदि प्रमुख हैं। इसके अतिरिक्त पुलों, स्कूलों, मोबाइल टावरों, सड़कों, रेल पटरियों आदि को क्षतिग्रस्त कर ये विकास की गति को रोकना चाहते हैं। आज इनका समर्थन अनेक बौद्धिक लोगों द्वारा किया जा रहा है, जिसे हम 'शहरी नक्सली' या 'अर्बन नक्सली' की संज्ञा दे रहे हैं। पूर्व प्रधानमंत्री डॉ0 मनमोहन सिंह ने कहा कि ये शहरी नक्सली जंगलों में

PIF-7.500 *ASVS Reg. No. AZM 561/2013-14*

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-III, Issues-18, YEAR- Dec. -2020

रहने वाले नक्सलियों से ज्यादा खतरनाक हैं। शहरी नक्सलवाद की अवधारणा कोई नई नहीं है यह पिछले दशक में तब प्रकाश में आयी जब 2004 में लगभग 40 नक्सली गुट ने के एक साथ मिलने के बाद भारत की कम्युनिष्ट पार्टी (माओवादी) का गठन हुआ। इनका उद्देश्य शहरी क्षेत्रों में नक्सलवाद का विस्तार, समर्थक तथा नेतृत्व तैयार करना, साथ ही शहरी गरीबो तथा औद्योगिक श्रमिकों को संगठित करना, मध्यमवर्गीय कर्मचारियों, बुद्धिजीवियों, दलित आदि अनेक धार्मिक अल्पसंख्यक संगठनों को शामिल करते हुए पुलिस में घुसपैठ करना, तथा सैन्य कार्यों में सम्मिलित होना आदि। शहरी नक्सलवाद की अवधारणा 2018 के सितम्बर माह में तब चर्चा में आयी जब महाराष्ट्र पुलिस द्वारा पाँच लोगों को जनवरी 2018 में घटित भीमा कोरे गाँव हिंसा मामले में उनकी संदिग्ध भूमिका तथा कथित माओवादी सम्बन्धों के कारण गिरतार किया गया। अनेक नक्सली समर्थक कोबाद गाँधी, नारायण सान्याल, अभिताभ बागची जैसे लोग जेलों में बन्द है। यह सत्य है कि जहाँ सेना या पुलिस बड़े मात्रा में संक्रियात्मक गतिविधियों को चलायेंगी, वहाँ हिंसा अवश्य होगी, लोग भी मारे जाते है, वहाँ मानवाधिकार का हनन तो अवश्य ही होगा। इन नक्सलियों के समर्थन में मानवाधिकार समूह अपनी आवाज बुलन्द करता है इनमें अरून्धती रॉय, दीपाकर भट्टाचार्य जैसे अनेक व्यक्ति संगठन में शामिल हैं, इनमें विश्वविद्यालयों के शिक्षक वर्ग भी शामिल हैं। गृह मंत्रालय की रिपोर्ट 2018–19 में 2010–2018 तक आन्ध्रप्रदेश, बिहार, छत्तीसगढ़, झारखण्ड, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, उड़ीसा, तेलंगाना, उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल तथा अन्य प्रदेशों में 11493 नक्सलीघटनाए घटित हुई, जिनमें 3749 लोग मारे गये।

नक्सलवाद से निपटने के लिए केन्द्र तथा राज्य सरकारों ने भी अनेक अभियान लागू किये हैं जिसमें ऑपरेशन स्टीपलचेन्ज, आपरेशन सलवा जुडूम, आपरेशन ग्रे–हाण्डस, आपरेशन ग्रीनहण्ट, आपरेशन हॉक, आपरेशन प्रहार एवं एकीकृत कमान, कोबरा बटालियन का गठन कर नक्सल विरोधी अभियान प्रारम्भ किये गये हैं। जिसके लिए केन्द्रीय सशस्त्र पुलिसबल की 110 बटालियनों को तैनात किया गया है। साथ ही इनका सहयोग करने के लिए 11 हेलिकाप्टर भी तैनात किये गये हैं। इसके अतिरिक्त विकास कार्य नक्सली क्षेत्रों में केन्द्र तथा राज्य आपसी समन्वय के आधार पर कर रहे हैं। जिससे नक्सली क्षेत्रों के हिंसा तथा क्षेत्र विस्तार में कमी आयी है। इस नक्सली आन्दोलन के नेता चारू मजूमदार की 1972 ई0 में जेल में मृत्यु हो गयी थी। कानू सान्याल ने आन्दोलन के राजनीति का शिकार होने एवं अपने मुद्दों के भटकने के कारण तंग आकर 23 मार्च 2010 को आत्महत्या कर ली। इन नक्सलियों पर प्रशासन का बढ़ता दबाव के कारण ये अब आत्मसमर्पण करके मुख्यधारा में वापस आ रहे हैं क्योंकि उनका मानना है कि बन्दुक किसी समस्या का समाधान नही है और इसी को ध्यान में रखते हुए आतंकवादियों नक्सलवादियों और माओवादियों को आत्म समर्पण नीति के माध्यम से मुख्य धारा में वापस लाने का प्रयास किया जा रहा है इसके लिए उन्हें प्रोत्साहन राशि तथा रोजगार या दोनों प्रदान किया जा रहा है। प्रत्येक राज्यों की आत्म समर्पण नीति भी अलग–अलग है, तथा सरकार द्वारा इन्हें अनेक प्रकार की सुविधाए दी जा रही हैं। फरवरी 2019 तक 11 राज्यों के 90 जिले नक्सलवाद प्रभावित थे। नक्सलवाद को समाप्त करने के लिए कुछ प्रभावशाली सुझाव निम्नवत है–

1– प्रभावशाली समर्पण और पुनर्वास नीति।
2– कुशल पुलिस नेतृत्व तथा अत्याधुनिक हथियारों से सज्जित करना।
3– मूलभूत सुविधाओं का मोबाइल टावर, स्कूल इत्यादि।
4– स्थानीय इलाकों के सम्बन्ध में पूरी जानकारी।
5– नक्सल विरोधी आपरेशन में अधिकाधिक लोगों को शामिल करना।
6– पुलिस द्वारा अच्छे कार्य के लिए प्रोत्साहन योजना तथा पुलिस का जनता के साथ अच्छा व्यवहार।
7– बेहतर गुप्तचर व्यवस्था एवं उनमें समन्वय।
8– स्थानीय सूचनाओं पर आधारित संक्रिया।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

(1) प्रोफेसर (डॉ0) लल्लन जी सिंह : राष्ट्रीय रक्षा और सुरक्षा संस्करण 2017
(2) डॉ0 अशोक कुमार सिंह : राष्ट्रीय सुरक्षा के आयाम – संस्करण–2019
(3) डॉ0 शेखर अधिकारी : राष्ट्रीय सुरक्षा के आयाम – संस्करण–2019
(4) हरीशरण, विनोद कुमार सिंह : भारतीय सुरक्षा (साम्प्रतिक चुनौतियाँ) संस्करण–2014
(5) डा0 संजय कुमार : भारत की आन्तरिक सुरक्षा चुनौतियाँ, संस्करण–2011
(6) मनोज श्रीवास्तव : नक्सलवाद : कारण समस्या एवं समाधान, संस्करण–2011
(7) प्रतिमा चतुर्वेदी : नक्सलवाद : आतंक या आन्दोलन, संस्करण–2011
(8) नरेन्द्र कुमार शर्मा : भारत में नक्सलवाद, संस्करण–2012
(9) अरूण कुमार दीक्षित व पंकज कुमार वर्मा : नक्सलवाद : मुद्दे, चुनौतियाँ एवं विकल्प–2014
(10) गृहमंत्रालय की वार्षिक रिपोर्ट : 2018–19

*****